उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक:1343/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 11–01–2024

दिनांक	:	11 जनवरी, 2023
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की अठारहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2023–24 की अठारहवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 11 जनवरी, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक ; नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक व धान प्रजनक; चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानुपर के मौसम वैज्ञानिक एवं गेहूँ प्रजनक; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; उद्यान विभाग; मत्स्य विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन वैज्ञानिकों; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक एवं कीट वैज्ञानिक तथा भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

आगामी सप्ताह (11 जनवरी से 18 जनवरी, 2024) का मौसम पूर्वानुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आगामी सप्ताह (11 जनवरी से 18 जनवरी, 2024) के दौरान प्रदेश का मौसम मुख्यतया शुष्क बना रहने तथा सुबह के समय कोहरा पड़ने की संभावना है।

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश में अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य अथवा सामान्य से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 16–19 डिग्री सेल्सियस; बुंदेलखंड एवं विन्ध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 21–24 डिग्री सेल्सियस; जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 19–21 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भांवर तराई क्षेत्र के पश्चिमी एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत न्यूनतम तापमान 04–06 डिग्री सेल्सियस; उत्तर–पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत न्यूनतम तापमान 08–10 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 06–08 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह (19 जनवरी से 26 जनवरी, 2024) का मौसम दृष्टिकोण

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम दृष्टिकोण के अनुसार द्वितीय सप्ताह (19 जनवरी से 26 जनवरी, 2024) के दौरान प्रदेश में कोई प्रभावी वर्षा होने की संभावना नहीं है।

प्रदेश में अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के अधिकांश भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 16–19 डिग्री सेल्सियस तथा बुंदेलखंड एवं विन्ध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग मध्य मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 21–24 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 19–21 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग, मध्य मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी–पश्चिमी भाग एवं दक्षिणी–पश्चिमी अर्ध शुष्क मैदानी के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जब कि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भावर तराई के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत् न्यूनतम तापमान 04–06 डिग्री सेल्सियस; उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग, पूर्वी मैदानी एवं बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी–पूर्वी भाग में औसत न्यूनतम तापमान 08–10 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में न्यूनतम तापमान में 06–08 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिनांक 08 जनवरी, 2024 तक उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 134.85 लाख हे. के सापेक्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 134.36 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 99.64 प्रतिशत है गेहूँ के आच्छादन लक्ष्य 102.00 लाख हे. के सापेक्ष 101.41 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 99.42 प्रतिशत है। जौ के आच्छादन लक्ष्य 1.94 लाख हे. के सापेक्ष 1.95 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 100.30 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 0.15 लाख के सापेक्ष 0.08 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 55.09 प्रतिशत है। चना के लक्ष्य 6.86 लाख हे. के सापेक्ष 6.82 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 99.46 प्रतिशत है। मटर के लक्ष्य 4.68 लाख हे. के सापेक्ष 4.69 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 100.21 प्रतिशत है। मसूर के लक्ष्य 5.67 लाख हे. के सापेक्ष 5.77 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 101.75 प्रतिशत है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुवाई लक्ष्य 4.60 लाख हे. के सापेक्ष 4.48 लाख हे. में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 97.49 प्रतिशत है जबकि राई–सरसों के 13.00 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 13.09 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 100.77 प्रतिशत है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- गेहूँ की खड़ी फसल में यदि जिंक की कमी के लक्षण दिखाई दे तो जिंक सल्फेट का प्रयोग खड़ी फसल में संस्तुत मात्रा के अनुसार करें।
- तिलहनी फसलों में माहूं का प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- आलू में पछेती झुलसा के लिये मौसम अनुकूल है अतः प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- जिन कृषकों ने अभी तक प्याज की रोपाई नहीं की है यथाशीघ्र समाप्त करें।
- जायद में अगेती सब्जियों की खेती के लिये लो टनल अथवा पॉलीहाऊस में पौध तैयार करें।
- उत्तर प्रदेश के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्रों में पाले की संभावना है अतः प्रकोप होने पर हल्की सिंचाई करें।
- पशुओं में सभी तरह के रोगों का टीकाकरण विभाग द्वारा मुफ्त कराया जा रहा है पशुपालक निःशुल्क टीकाकरण अवश्य करायें।
- पशुओं को ठंड से बचाने के लिये सुबह शाम पशुओं पर झूल डालें तथा रात में पशुओं को अन्दर पशुघर में बॉधें।
- तापमान के कम होने के कारण यदि पंगेशियस मछली अभी भी किसी मत्स्य पालक के तालाब में हो तो उसे यथाशीघ्र विक्रय कर दें अन्यथा भारी मृत्युदर हो सकती है।

- भारत सरकार द्वारा तापमान में संभावित वृद्धि के दृष्टिगत गेहूँ फसल की निगरानी/मॉनीटरिंग के संबंध में जारी निर्देश के क्रम में अवगत कराना है कि क्राप वेदर वॉच ग्रुप द्वारा पूर्व में ही प्रदेश के कृषकों को गेहूँ की तापमान सहिष्णु (हीट टॉलरेंट) प्रजातियों की बुवाई के लिये संस्तुति की जा चुकी है तथा उपरोक्त निर्देशों के अनुक्रम में इस समूह द्वारा तापक्रम पर नियमित निगरानी रखी जा रही है तथा संभावित तापमान वृद्धि की स्थिति में आवश्यकतानुसार मौसम आधारित कृषि सलाह जारी की जायेगी।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ की फसल में नाइट्रोजन की शेष मात्रा को दो भागों में बाँटकर एक भाग प्रथम सिंचाई के बाद एवं दूसरे भाग को दूसरी सिंचाई के बाद जब खेत में पैर सधने लगे तब टॉप ड्रेसिंग करें।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण हेतु 2–4 डी सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत की 625 ग्राम प्रति हेक्टेयर या 2–4डी मिथाइल एमाइन साल्ट 58 प्रतिशत एस.एल. की 1.25 लीटर प्रति हेक्टेयर या कार्फेन्ट्राजॉन इथाइल 40 प्रतिशत डी.एफ. की 50 ग्राम प्रति हे. अथवा मेटसल्फ्यूरॉन इथाइल 20 प्रतिशत डब्लू.पी. की 20

ग्राम प्रति हे. मात्रा को लगभग 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 30 से 35 दिन बाद फ्लैटफैननाजिल से छिड़काव करें

- गेहूंसा एवं जंगली जई के नियंत्रण हेतु आइसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 1.25 कि.ग्रा. की संस्तुत मात्रा को लगभग 500 से 600 पानी में घोलकर अथवा सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू.जी. की 33 ग्रा. (2.5 यूनिट) 300 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. फ्लैटफैननाजिल से बुवाई के 30 से 35 दिन बाद फ्लैटफैननाजिल से छिड़काव करें।
- खड़ी फसल में यदि जिंक के कमी के लक्षण दिखाई दे तो 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 16 कि.ग्रा. यूरिया को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें। यदि यूरिया की टापड्रेसिंग की जा चुकी है तो यूरिया के स्थान पर 2.5 कि.ग्रा. बुझे हुये चूने के पानी में जिंक सल्फेट घोलकर छिड़काव करें (2.5 कि.ग्रा. बुझे हुये चूने को 10 ली. पानी में सायंकाल डाल दें तथा दूसरे दिन प्रातःकाल इस पानी को निथारकर प्रयोग करें)।
- गेरूई एवं पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु थायोफिनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्लू. पी. की 700 ग्राम अथवा जीरम 80 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 कि.ग्रा. अथवा मैकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू. पी. की 2 कि.ग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू. पी. की 2 कि.ग्रा. प्रति हे. लगभग 750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- गेरूई के नियंत्रण हेतु प्रोपीकोनाजोल 25 प्रतिशत ई.सी. की 500 मिली. प्रति हेक्टेयर लगभग 750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।
- जौ फसल की पहली सिंचाई बुवाई के 30 से 35 दिन बाद कल्ले फूटते समय व दूसरी दुग्धावस्था में करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- सरसों में माँहू की रोकथाम हेतु नाशीजीवों के प्राकृतिक शत्रुओं जैसे इन्द्रगोप भृंग, काइसोपा, सिरीफेड आदि का फसल वातावरण में संरक्षण करना चाहिए। नाशीजीवों व उनके प्राकृतिक शत्रुओं की संख्या 2:1 का अनुपात होना चाहिए। यदि नाशीजीवों की संख्या प्राकृतिक शत्रुओं से अधिक है तो डाइमिथोएट 30 प्रतिशत ई. सी. अथवा आक्सीडेमेटॉन–मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. अथवा क्लोरीपाईरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. की 1 लीटर अथवा मोनोक्रोटोफास 36 एस.एल. की 500 मिली प्रति हे. दर से लगभग 600 से 750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- अल्टरनेरिया, पत्ती धब्बा, सफेद गेरूई एवं तुलसिता रोग के नियन्त्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2.0 कि. ग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा अथवा जिरम 80 प्रतिशत डब्लू पी की 2.0 किग्रा. अथवा कापर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3.0 किग्रा. मात्रा प्रति हे. लगभग 600–750. लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

- खेत में यदि कटुआ कीट दिखाई दे रहे हों तो स्थान–स्थान पर बर्ड पर्चर लगायें तथा थोड़ी–थोड़ी मात्रा में कई स्थानों पर घास–फूस रखें। प्रातःकाल फूस पर छिपे हुए कटुआ कीटों को इकट्ठा कर समाप्त करें तथा रासायनिक उपचार हेतु क्लोरपाईरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. की 1250 मि.ली. मात्रा को 500 से 600 पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- मटर में फूल आने एवं दाना बनते समय आवश्यकतानुसार सिंचाई अवश्य करें।
- मटर में फली छेदक/फली बेधक कीट के प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु फूल एवं फलियां बनते समय 5 फरोमोन ट्रैप और 2 प्रकार प्रपंच प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में लगायें तथा नीम के बीज आर्क (5 प्रतिशत) प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करें।
- मटर में अल्टरनेरिया, पत्ती धब्बा एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3 किग्रा. मात्रा प्रति हे. लगभग 500–600 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- मटर में बुकनी रोग के नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत 2 कि.ग्रा. अथवा ट्राईडेमेफॉन 25 प्रतिशत डब्लू.पी. 250 ग्राम प्रति हेक्टेयर लगभग 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें या डिनोकेप/कैराथेन कैलिक्सिन 1 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें, आवश्यकतानुसार 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव को दोहरायें।

गन्ना की खेती

- गन्ने की कटाई जमीन के बराबर से करें।
- गन्ने के साथ अंतफसली खेती की दशा में अंतःफसल की मांग के अनुसार सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई करें तथा अंतः फसल की कटाई/खुदाई के उपरांत फसल अवशेष यथाशीघ्र मृदा में मिला दें।
- शरदकाल में बोये गये गन्ने में हल्की सिंचाई कर गुड़ाई करें।
- जाड़े में काटे गन्ने की पेड़ी में अपेक्षाकृत कम फुटाव होता है। अच्छा फुटाव प्राप्त करने के लिये सिंचाई के उपरान्त ओट आने पर 10 टन/हे. ताजा प्रेसमड डालकर गुड़ाई करें। इनसे फुटाव अच्छा होगा।

सब्जियों की खेती

- प्याज की पूसा गोल, कल्यानपुर लाल गोल तथा लाईट रेड किस्मों की रोपाई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- टमाटर तथा मिर्च में झुलसा रोग से बचाव हेतु मैंकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- प्याज की नर्सरी में आर्द्र गलन रोग से बचाव हेतु कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें तथा ठंड एवं पाले से बचाव हेतु लो टनल का प्रयोग करें।
- सब्जियों में विशेषतया टमाटर मिर्च में विषाणु रोग का प्रकोप अधिक होता है इस रोग के प्रसार वाहक कीट की रोकथाम हेतु डाईमिथोएट 1 मिली दवा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आलू में पछेती झुलसा बीमारी की रोकथाम हेतु मैंकोजेब/प्रोपीनेब/क्लोरोथेलोंनिल युक्त फफूँदीनाशी का रोग सुग्राही किस्मों पर 0.2–0.25 प्रतिशत की दर से अर्थात 2.0–2.5 कि.ग्रा. दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. छिड़काव करें साथ ही साथ यह भी सलाह दी जाती है कि जिन खेतों में बीमारी प्रकट हो चुकी हो उसमें किसी भी फफूंदनाशक–साइमोक्सेनिल 8 प्रतिशत+ मैंकोजेब 64 प्रतिशत डब्लू.पी. का 3 कि.ग्रा. दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. छिड़काव करें अथवा फेनोमिडोन+मैंकोजेब की 1 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15–15 दिन के अंतराल पर घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- नवीन रोपित बागों की आवश्यकतानुसार सिंचाई निराई एवं गुड़ाई का कार्य करें।
- आम में छाल खाने वाले कीटों तथा तनाबेधक कीटों के नियंत्रण हेतु छिद्रों को साफ करके 0.05 प्रतिशत डाइक्लोरोवास का घोल छिद्रों में भरकर बंद कर दें।
- केले में माहू का प्रकोप दिखाई पड़ने पर मोनोक्रोटोफॉस 1.25 मिली./ली. पानी का छिड़काव करें।
- गुजिया (मिली बग) के उपचार के लिये आम के तने के चारों ओर गहरी जुताई करें। तने पर 400 गेज की पालीथीन की 25 सेमी. चौड़ी पट्टी बाँधे और पट्टी के ऊपरी तथा निचले किनारों को सुतली से बाँधकर निचले सिरे पर ग्रीस लगाकर सील कर दें। 2 प्रतिशत मिथाइल पैराथियान चूर्ण (200 ग्राम/पेड़) तने के चारों ओर बुरक दें। यदि कीट पेड़ पर चढ़ गये हों तो 0.04 प्रतिशत मोनोक्रोटोफॉस (1 मिली./लीटर पानी) या डाइमेथोएट 0.06 प्रतिशत (02 मिली./ली. पानी) का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

पशुपालन

- बरसीम अधिक खिलाने से पशुओं को अफरा हो सकता है, अफरे से बचाव के लिये बरसीम के साथ सूखा चारा मिलाकर खिलायें।
- पशुओं को संतुलित आहार के साथ खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें एवं नमक तथा गुड़ का घोल बनाकर खिलायें।
- विकासखण्ड स्तर/तहसील/जनपद स्तर पर पंडित दीन दयाल उपाध्याय बहुउद्देश्यीय पशुचिकित्सा शिविरों को आयोजन किया जा रहा है, जिसमें विशेषज्ञों की टीम द्वारा उपचार किया जा रहा है। इसका कृषक भाई नजदीकी पशु चिकित्सालय पर सम्पर्क कर लाभ ले सकते है।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिये पूरा दूध निकाले और दूध दोहन के बाद थनों को कीटाणुनाशक घोल में डुबायें।
- खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण कराया जा रहा है, यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।

- वर्तमान मौसम को देखते हुए पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सुबह–शाम पशुओं पर झूल डालें तथा रात में पशुओं को अन्दर पशुघर में बाँधें।
- पशुबाड़े में बिछावन के रूप में पुआल/गन्ने की सूखी पत्तियों का प्रयोग करें।
- मुर्गियों के बिछावन को सूखा रखें।

मत्स्य पालन

- वर्तमान समय में कम तापमान चल रहा है ऐसे समय में तालाबों में अल्सरेटिव डिजीज सिड्रोम की बीमारी परिलक्षित होती है अतः कृषकों को सलाह दी जाती है कि अपने अपने तालाबों में 2 से 2.5 कु./हे. की दर से बुझे चूने का प्रयोग करें।
- तालाब में सिंचित मत्स्य बीज के पोषण हेतु रासायनिक उर्वरकों को मासिक रूप से 74 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर (सुपरफास्ट–25 कि.ग्रा., यूरिया–45 कि.ग्रा., म्यूरेट ऑफ पोटाश 04 कि.ग्रा.) की दर से प्रयोग करें।
- तालाबों का जल स्तर 5 से 5.5 फुट तक बनाये रखा जाय।
- वर्तमान में मछलियों में वृद्धि दर कम होती है अतः पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 प्रतिशत तक ही किया जाय।
- तापमान के कम होने के कारण यदि पंगेशियस मछली अभी भी किसी मत्स्य पालक के तालाब में हो तो उसे यथाशीघ्र विक्रय कर दें अन्यथा भारी मृत्युदर हो सकती है।
- जिन तालाबों में मछलियों को रोग नहीं लगा है उनमें भी 250 किग्रा. प्रति हे. की दर से बुझे हुए चूने का घोल बनाकर छिड़काव करें।

रेशम पालन

- शहतूत वृक्षारोपण की प्रूनिंग अथवा टिमिंग का कार्य पूर्ण होने के उपरांत शहतूत बागानों से खरपतवार एवं घास आदि की सफाई समय से करा ली जाय तथा विभाजित खुराक के रूप में उर्वरक का प्रयोग करते हुये तुरंत सिंचाई करना चाहिये साथ ही नर्सरी लगाने की कार्यवाही शीघ्र ही पूर्ण कर ली जाय।

वानिकी

- पॉपलर की कटिंग क्यारियों में लगा दें। बकैन जैसे पतझड़ी पौधों का रोपण कर दें।
- यूकेलिप्टस पौध को अंकुरण कक्ष से छाया कक्ष में स्थानान्तरित कर दें अन्यथा कोहरे से नुकसान होगा।
- सिरस, खैर, आंवला, सागौन, बकैन, अकेशिया–आरक्यूलीफार्मिस व अमलतास के बीज स्थानीय रूप से एकत्र कर लें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 18 जनवरी, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

(संजय सिंह)
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।

9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र.।
16. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
17. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
18. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
19. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
20. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
21. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
22. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
23. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
24. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
25. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
28. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
29. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
30. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
31. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
32. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
33. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
34. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
35. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
36. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
40. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
41. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
42. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
43. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
44. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
45. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

11-1-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की अठारहवीं बैठक दिनांक 11 जनवरी, 2024 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
3. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ (ऑनलाइन)
4. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उपकार, लखनऊ
5. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
6. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश
7. श्री ए.के. बिश्नोई, संयुक्त कृषि निदेशक, धान्य फसलें, कृषि विभाग, उ.प्र.
8. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ
9. श्री ए. के. शुक्ला, सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश
10. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
11. डा. सोमवीर सिंह, व्हीट ब्रीडर, सेक्शन ऑफ रबी सीरियल, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
12. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
13. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक, पशुपालन, उत्तर प्रदेश
14. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)
15. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
16. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना कालेज ऑफ फारेस्ट्री शुआट्स, प्रयागराज
17. श्री नीरेन्द्र कमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश
18. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ
19. श्री बालकृष्ण वर्मा, तकनीकी अधिकारी, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, सप्रू मार्ग लखनऊ
20. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ
21. श्री सुमित कुमार, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ